प्राइवेट मेंबर्स रिजोल्यूशन - श्री .एस. एस. अहलुवालिया - अनुपस्थित। श्री वी. नारायणसामी।

STATEMENT BY MINISTER

Threat of bomb explosion in Parliament House and security precaution taken thereafter

गृह मंत्री (श्री शिवराज वी. पाटिल) : श्रीमन्, मैं दूसरे हाऊस में था और अब वहाँ से यहाँ पर आ रहा हूँ।

श्री सभापति : कोई बात नही।

श्री शिवराज वी. पाटिल : आज चेन्नई से यहाँ पर मालूमात आई कि वहाँ का जो अमेरिकन कोन्सुलेट है, उनके पास किसी ने दो ई-मेल करके बताया था कि उनके कोन्सुलेट को और पार्लियामेंट को बम के द्वारा 11 बजकर 45 मिनट पर उड़ाया जाएगा। कोन्सुलेट ने वह इन्फॉर्मेशन तमिलनाडु पुलिस को दी और तमिलनाडु की पुलिस ने हमारे लोगों को दी। उनको इन्फॉर्मेशन मिलने के बाद यह यहाँ पर पहुँची। हमने यहाँ पर अमेरिकन कोन्सुलेट से भी, एम्बैसी से भी मालूमात करने के बाद कि यह हुआ है, इसका पता किया। उसके बाद दिल्ली पुलिस को वह इन्फॉर्मेशन दी गई और यहाँ भी पार्लियामेंट के अधिकारियो को वह इन्फॉर्मेशन दी गई। उसके बाद यहाँ पर कार्रवाई हुई।

इस प्रकार के hoax calls पहले भी आते रहे हैं, मगर इस बदले हुए माहौल मे किसी भी कॉल को आसानी से लेना ठीक नही है। वह सही तरीके से दोनो ही सदनो ने यह तय किया कि सब सदस्य बाहर चले जाएँ और पूरी तरह से जाँच-पड़ताल हो। उसके पश्चात् दिल्ली पुलिस के लोगों और बम्ब स्क्वाड के लोगो द्वारा आकर पूरी तरह से जाँच-पड़ताल करने के बाद और इसको "क्लीन है", यह बताने के बाद यह सदन आज चल रहा है। मैं समझता हूँ कि यह जो ई-मेल वहां से भेजा गया है, वह होम मिनिस्टर के नाम पर, स्पीकर साहब के नाम पर और चेयरमैन साहब के नाम पर और दूसरों के नाम पर भी भेजा गया है। मगर ई-मेल मे थोड़ी-सी गलती होने की वजह से यहाँ पर नही पहुँचा है। उसकी पूरी तरह से जाँच-पड़ताल हो रही है और हमें उम्मीद है कि वह पता चल जाएगा।

यदि इस प्रकार का कोई प्रसंग आगे आए, तो हमे क्या करना है, उसके लिए हमने अपने लोगो को भी कहा है कि यहाँ के सेक्रेटरी जनरल, लोक सभा के सेक्रेटरी जनरल, सेक्योरिटी ऑफिसर्स, इनसे मिल कर बातचीत करे और इससे भी ज्यादा कुछ करना है, तो हम कर सकते हैं। प्रेमिसेज की पूरी सेक्योरिटी पार्लियामेंट के हाथ मे है और बाहर की पूरी सेक्योरिटी दिल्ली पुलिस देखती है। मगर दिल्ली पुलिस हो या अन्दर की सेक्योरिटी हो, वह हमारी ही सेक्योरिटी है, जिसे हमे देखना जरूरी है। उसमे जो भी करना जरूरी है, हम करेंगे। ऐसे हालात में हम सब लोग मिलकर किस प्रकार से उसका सामना करे, इसके बारे मे भी कुछ विचार करके, सम्पूर्ण विचार करके सभी सदस्यो को साथ लेकर चलेंगे। मैं समझता हूँ कि हम

ऐसी चीजों का डटकर मुकाबला करेंगे, हिम्मत से मुकाबला करेंगे, जितनी हमारी ताकत है। वह सब कुछ, आप जैसा बोलें, उसके बाद जो करना है, हम कर लेंगे।

श्री सभापति : ठीक है। आपका गला क्यों बैठ गया है?

श्रीमती सुषमा स्वराज (उत्तरांचल) : सर, मैं एक क्लैरिफिकेशन मंत्री जी से ले लूँ? ...**(व्यवधान)**... मैं केवल एक स्पष्टीकरण मंत्री जी से ले लूँ? ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : नहीं, वह छोड़िए। ...**(व्यवधान)**...

श्रीमती सुषमा स्वराज : वह नहीं, केवल इतना कि आप जिस ई-मेल का जिक्र कर रहे हैं, उसमें केवल इंडियन पार्लियामेंट लिखा है या ब्रिटिश पार्लियामेंट भी लिखा है! ...**(व्यवधान)**...

श्री सभापति : उसे छोड़िए।...**(व्यवधान)**...

श्री शिवराज वी. पाटिल : सर, जो ई-मेल आया है, उसके अन्दर अमेरिकन कोन्सुलेट्स और पार्लियामेंट, ऐसा लिखा है, इंडियन वगैरह नहीं। अमेरिकन कोन्सुलेट्स इन इंडिया और पार्लियामेंट लिखा है।

PRIVATE MEMBER'S RESOLUTION

Need to ameliorate economic condition of farmers in the backdrop of natural calamities

SHRI V. NARAYANASAMY(Pondicherry): Sir, I move the following Resolution--

"Having regard to the fact that -

(i) even after more than five decades of independence the overall lot of farmers, who constitute majority of the population of the nation, has not improved to the desired level and it is indeed very sad that thousands of farmers have committed suicide during the last few years, unable to face the miseries and hardships by themselves and their families and due to the pressure on them to repay their loans taken from moneylenders, banks, cooperatives, etc.;

(ii) majority of the farmers are indebted in the country because they do not get remunerative prices of their produce mostly due to the faulty procurement policy of the Government and the nexus between the private traders and the Government procurement agencies which forces them to sell their produce at throwaway prices;

(iii) the farmers face the brunt of natural calamities such as drought, flood and their crops, dwelling units, household items including food grains, livestock are affected and their miseries are